औलाद के हुकूक

संपादक- मौलाना जलील अहसन नदवी रह.

1] रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया की बाप अपनी औलाद को जो कुछ देता है उसमे सबसे बेहतर भेंट उस्की अच्छी तालीम और तरबियत है.

_मिश्कात की रिवायत का खुलासा | रावी सइदन बिन अल आस.

2] रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया की अपनी औलाद को नमाज़ पढने का हुक्म दो जब की वो सात साल के हो जाए, और नमाज़ के लिये उन्को मारो जब वो दस साल की उम्र के हो जाए और इस उम्र को पहुंचने के बाद उन्के बिस्तर अलग कर दो.

इस्से मालूम हुआ की बच्चे जब सात साल के हो जाए तो उन्को नमाज़ का तरीका सिखाना और नमाज़ पढने को कहना चाहिये और जब वो दस साल के हो जाए और नमाज़

ना पढें तो उन्हें मारा भी जा सकता है.
उनपर यह जाहिर कर देना चाहिये की तुम्हारा नमाज़ ना पढना हमारी नारजगी का सब्ब होगा और इस उम्र को पहंचने के बाद बच्चों का बिसतर अलग कर देना चाहिये, बहुत से बच्चे एक साथ एक बिसतर पर ना लेटे.

_मुस्लीम की रिवायत का खुलासा | रावी अबू हुरेरा रदी.

3] रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया जब इन्सान मर जाता है तो उस्का अमल (कर्म) खत्म हो जाता है मगर तीन तरह के कर्म ऐसे है की उन्का सवाब मरने के बाद भी मिलता रहता है.
एक यह की वो सदक-ए-जारिया कर जाए, दूसरा ऐसा इल्म छोड जाए जिस्से लोग फायदा उठाये तीसरा नेक लडका जो उस्के लिये दुआ करता रहे.
सदक-ए-जारिया से मुराद वो सदका है जिस्से ज्यादा दिनों तक फायदा उठाया जा सके, नहर खुदवा दे या कुवा खुदवा दे या मुसाफिरों के लिये सराय बनवा दे या रास्ते पर पेड लगवा दे या किसी दीनी मदरसों में किताबें दान कर जाए

वगैरा तो जब तक उस काम से लोग फायदा उठायेंगे उसे सवाब मिलता रहेगा. इसी तरह वो किसी को तालीम दे या दीनी किताबें लिख जाए तो उस्का सवाब भी मिलता रहेगा.

इसी तरह वो उस्का अपना लडका है जिस को उसने शुरू ही से बेहतरीन तरबियत दी हो और इस कोशिश के नतीजे में वो मुत्तकी और परहेजगार बना है तो जब तक यह लडका दुनिया में जिन्दा रहेगा उस्की नेकियों का सवाब उस्के बाप को मिलता रहेगा, और ये की वो नेक है इसलीये वो अपने माँ-बाप के हुकूक में दुआए करेंगा.

_मुस्लिम की रिवायत का खुलासा | रावी अबू हुरैरा रदी.

4] रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया की जिस शख्स ने किसी यतीम को अपने साथ मिलाया और अपने खाने पीने में उसे शरीक किया तो वास्तव में अल्लाह ने उस्के लिये जन्नत वाजिब करदी, मगर जबकी वो कोई ऐसा गुनाह करे जो माफी की काबिल ना हो.

और जिस शख्स ने तीन लडकियों या तीन बहनों की देख भाल की और उन्हें शिक्षा और तरबियत दी और उन्के साथ रहम का सुलूक किया यहां तक की अल्लाह उन्हें बेनियाझ कर दे तो ऐसे शख्स के लिये अल्लाह ने जन्नत वाजिब कर दी, इस पर एक आदमी ने कहा की अगर दो ही हो? तो आपﷺ ने फरमाया दो लडकियों की देख भाल पर भी यही अजरो सवाब है.

इबने अब्बास कहते है की अगर लोग एक के बारे में पूछते तो आप एक के बारे में भी यही खुशखबरी देते और जिस शख्स से अल्लाह ने उस्की दो बेहतर चीझे ले ली तो उस्के लिये जन्नत वाजिब हो गई.

पूछा गया ए अल्लाह के रसूल! दो बेहतर चीझे क्या है? आपﷺ ने फरमाया उस्की दोनो आंखे.

इस्से मालूम हुआ की अगर किसी के यहां लडकियां ही लडकियां हो तो उन्के साथ बुरा सुलूक ना करना चाहिये बल्की उन्की पूरी देख भाल करनी चाहिये उन्को दीनी शिक्षा

और तरबियत देनी चाहिये और उन्के साथ मेहरबानी और मोहब्बत उस वकत तक करना चाहिये जब तक उन्की शादी ना हो जाए, जो शख्स ऐसा करेंगा आपﷺ उस्को जन्नत की खुशखबरी देते है.

इसी तरह एक भाई है जिसके छोटी छोटी बहनें है तो उसे भी अपनी इन बहनों को वबाले जान ना समझना चाहिये बल्की उन्का पूरा खर्च बरदाश्त करना चाहिये और उन्को शिक्षा और दीनदारी के जेवर से सजाना चाहिये और शादी होने तक मेहरबानी करना चाहिये.

_मिश्कात की रिवायत का खुलासा | रावी इबने अब्बास रदी.

5] रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया जिस शख्स के कोई बच्ची पैदा हुई और उसने जाहिलियत के तरीके पर जिन्दा दफन नही किया और ना उस्को कमतर जाना और ना लडकों को उस्के मुकाबले में महानता दी, तो अल्लाह ऐसे लोगों को जन्नत में दाखिल करेंगा.

_अबू दाउद की रिवायत का खुलासा | रावी इबने अब्बास रदी.

6] हजरत आईशा (रदी) फरमाती है की मेरे पास एक औरत आई उस्के साथ दो बच्चियां थीं, वो मुझसे कुछ मांगने के लिये आई थी, उस वकत मेरे पास सिवाये एक खजूर के कुछ ना था, वही मेने उसे दे दी, उसने उस खजूर को उन दोनो लडकियो में बांट दिया और खुद कुछ ना खाया फिर वो उठी और चली गई.

उस्के बाद जब आपﷺ मेरे पास आए तो मेने उस औरत का हाल बयान किया की भूकी होने के बावजूद उसने अपने उपर अपनी दो बच्चियों को तरजीह दी आपने फरमाया की जिस शख्स को उन बच्चियों के जरिये आजमाइश में डाला गया, फिर उसने उन बच्चियों के साथ अच्छा व्यवहार किया तो यह बच्चियां उस्के लिये जहन्नम से पर्दा बन जायेंगी.

जिस शख्स को अल्लाह सिर्फ लडकियां देता है वो भी अल्लाह का इनाम होती है और अल्लाह देखना चाहता है की माँ-बाप उन बच्चियों के साथ क्या सुलूक करते है जो ना उन्हें कमाकर देने वाली है और ना खिदमत के लिये उन्के

साथ हमेशा रहने वाली है, फिर भी उन्के साथ अच्छा व्यवहार किया जाए तो यह अपने माँ-बाप की बखशिश (क्षमा) का जरिया बनेंगी.

_बुखारी मुस्लीम की रिवायत का खुलासा.

7] नुअमान बिन बशीर ने कहा की मेरे पिता मुझे लेकर रसूलुल्लाहﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए और कहा की ए अल्लाह के रसूल! एक गुलाम मेरे पास था मेने इस लडके को दे दिया, आपने पूछा क्या अपने सब लडकों को दिया है? उन्होने कहा नही, तब आपﷺ ने फरमाया उस गुलाम को तू वापस ले ले.

दूसरी रिवायत में यह है क्या तुमने अपने सब लडकों के साथ ऐसा ही मामला किया है? उन्होने कहा नही, तो आपने फरमाया अल्लाह से डरो और अपनी औलाद में बराबरी का मामला करो तो मेरे बाप घर आए और उस गुलाम को वापस ले लिया.

तीसरी रिवायत में यह है आपﷺ ने फरमाया तो फिर तू मुझे

गवाह ना बना में ज़ालिम का गवाह ना बनूंगा.

चौथी रिवायत में यह है आप ने फरमाया क्या तुम्हें यह बात पसन्द है की सब लडके तुम्हारे साथ अच्छा सुलूक करे? मेरे बाप ने कहा हां आपने फरमाया फिर ऐसा मत करो.

इन रिवायतो से मालूम हुआ की औलाद के साथ बराबरी का सुलूक करना चाहिये, वरना यह जोर और जुल्म होगा, और अगर ऐसा किया गया तो उन्के दिल आपस में फटेंगे और जिन बच्चों को नही दिया गया है उन्के दिल में बाप के खिलाफ नफरत पैदा होगी.

_बुखारी मुस्लीम की रिवायत का खुलासा.

8] उम्मे सलमा (रदी) ने रसूलुल्लाहﷺ से पूछा की क्या मुझे सवाब मिलेगा अबू सलमा की बेटियों पर खर्च करने से और में उन्हें इस तरह मोहताज और दरबदर मारे फिरने के लिये छोड नही सकती, वो तो मेरे ही बेटे है? आपﷺ ने फरमाया की हां जो कुछ तुम उन पर खर्च करोंगी तुम्हें उस्का बदला

मिलेगा.
उम्मे सल्मा (रदी) के पहले शौहर का नाम अबू सल्मा (रदी) है उन्की मौत के बाद यह आपﷺ के निकाह में आ गई थी इसलीये अबू सल्मा (रदी) से जो उन्के बच्चे पैदा हुए थे उन्के बारे में पूछा.
_बुखारी मुस्लीम की रिवायत का खुलासा.

9] रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया की में और झुलसे हुए चेहरे वाली औरत कयामत के दिन इन दो उंगलियों की तरह होगे (यजीद बिन जरीअ ने यह हदीस बयान करते हुए अपनी बीच की उंगली और कलमा-ए-शहादत की उंगली की तरफ इशारा किया) यानी वो औरत जिसका शौहर मर गया और वो खानदानी शराफत और जाती हुसन और जमाल रखती है लेकिन उसने अपने मरने वाले शौहर के बच्चों के लिये अपने आप को निकाह से रोके रखा यहां तक की वो जुदा हो गये या मर गये.
इस का मतलब यह हुआ की अगर कोई औरत बेवा हो जाए और उस्के छोटे बच्चे हो और लोग उससे शादी करना चाहते

भी हो लेकिन वो अपने उन यतीम बच्चों की परवरिश की वजह से शादी नही करती और इज्ज़त और पाकदामनी के साथ ज़िन्दगी गुजारती है तो ऐसी औरत को कयामत के दिन रसूलुल्लाहﷺ की नजदीकी हासिल होगी.

_अबू दाउद की रिवायत का खुलासा | औफ बिन मालिक रदी.

10] रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया की में तुम्हें बेहतरीन सदका बतावु? वो तेरी बेटी है जो तेरे पास लौटा दी गई है और उस्को कोई तेरे सिवा कमाकर खिलाने वाला नही है.

यानी ऐसी लडकी जिस की बदसूरती या जिस्मानी कमी की वजह से शादी नही होती या शादी के बाद तलाक मिल गई है और तुम्हारे सिवा कोई उस्को खिलाने पिलाने वाला नही है तो उसपर जो कुछ तुम खर्च करोगे वो अल्लाह की निगाह में बेहतरीन सदका (दान) होगा.

_इबने माजा की रिवायत का खुलासा | सुराका बिन मालिक रदी.